हमारे कर्मों के इतने सटीक रिकार्ड पर हम अचंभित हो जाएंगे, हमें उन बातों को याद दिलाया जायेगा जिन्हें हम बिल्कुल भूल चुके होंगे। अल्लाह कहता है:

“जिस दिन कि अल्लाह उन सबको (मृत्यू के पश्चात) उठा खड़ा करेगा फिर जो कुछ उन्होंने किया है उससे सूचित कर देगा। अल्लाह ने उसे गिन रखा है और यह उसे भूल गए। और अल्लाह हर चीज़ से अवगत है।” (कुरआन ५८:६)

इस बात पर संजीदगी से सोचें तो हमें शर्म आएगी कि हमारे हर कर्म को लोखा जा रहा है और एक दिन आएगा जब अल्लाह के सामने उन्हें हमारे खिलाफ पेश किया जाएगा।

वे लोग जो इन्सान के दोबारा जीवित किये जाने और अल्लाह द्वारा उनके हिसाब-किताब का इन्कार करते हैं, उनके इस मनघड़त सोच के बारे में कुरआन कहता है:

“और उसने हमारे लिए मिसाल बयान की और अपनी मूल पैदाइश को भूल गया, कहने लगा कि इन सड़ी-गली हड्डियों को कौन ज़िन्दा कर सकता है? कह दीजिये कि उन्हें वह ज़िन्दा करेगा जिसने उन्हें पहली बार पैदा किया, जो सब प्रकार की पैदाइश को अच्छी तरह जानने वाला है।”(कुरआन;३६:७८-७९)

स्वर्ग और नरक

जो सिर्फ एक खुदा पर विश्वास रखते हैं, किसी को उसका साझी नहीं बनाते तथा अच्छे कर्म करते हैं उनको बदले में स्वर्ग से पुरस्कृत किया जाएगा।

“बेशक जन्नत वाले लोग आज के दिन अपने (मनोरंजन) कामों में व्यस्त खुश और आनन्दित है। वह और उनकी पतिन्यां छाओं में मसहरियों पर तकिया लगाये बैठे होंगे। उन के लिए जन्नत में हर तरह के मेवे होंगे और दूसरे भी जो कुछ वे मांगेगे।” (कुरआन ३६:५५-५७)

पैगम्बर मुहम्मद (स०) से वर्णित है कि अल्लाह ने कहा है:

“मैंने अपने नेक बन्दों के लिए ऐसी चीज़ें बनाई हैं कि जिन्हें किसी आँख ने नहीं देखा, न किसी कान ने सुना है और न ही किसी दिल ने उसकी कल्पना की है।”

इसके ठीक विपरीत जो लोग अल्लाह के साथ दूसरों को साझी ठहराते हैं, उनसे कहा गया;

“यही वह नरक है जिसका तुम्हें वादा किया जाता था। अपने कुफ्र का बदला हासिल करने के लिए आज उसमें दाखिल हो जाओ” (कुरआन ३६:६३-६४)

नास्तिकों के लिए अत्यंत ही यातनादायक दण्ड दिया जाएगा;

“बेशक नरक घात में है। उद्दण्डियों की जगह वही है। उस में वे कई युगों (और सदियों) तक पड़े रहेंगे। न कभी उसे मं ठड़ का मज़ा चखेगें न पानी का। सिवाय गर्म पानी और बहती हुई पीप के। (उन को) पूरी तरह से बदला मिलेगा। उन्हें तो हिसाब की उम्मीद ही न थी। वे बेबाकी से हमारी आयतों को झुठलाते थे। हम ने हर बात को लिख कर सुरक्षित (महफूज) रखा है। अब तुम (अपने किये का) मज़ा चखो, हम तुम्हारा अज़ाब ही बढ़ाते जायेंगे।”

(कुरआन ७८:२१-३०)

निष्कर्ष

“हे मनुष्य! किस चीज़ ने तुझे धिखे में डाल रखा है अपने उदार रब के बारे में। जिसने तुझे बनाने का निश्चय किया, तो तुझे ठीक-ठीक और संतुलित बनाया? फिर जिस प्रकार के रूप में चाहा उसने तुझे जोड़ कर तैयार किया। कुछ नहीं, तुम तो बदला दिये जाने को झुठलाते हो।”

(कुरआन ८२:६-९)

“बेशक नेक लोग (जन्नत के ऐशो आराम और) नेमतों से फायेदा उठाने वाले होंगे। और यकीनी तौर से बुरे लोग जहन्नम में होंगे।”(कुरआन ८२:१३-१४)

मौत तो अटल है। हमारे इस जीवन का उद्देश्य सीर्फ एक सच्चे खुदा की इबादत करना, अच्छे कर्म करना तथा जिन कामों को वर्जित किया गया है उनसे बचना है। हमारे भाग्य का फैसला हमारे कर्मों के अनुसार होगा, तो अब यह हम पर निर्भर है कि हम इस जीवन में दिये गए अवसर का सही इस्तमाल करके अच्छे कर्मों के साथ स्वर्ग में जगह बनाते हैं या अपनी इच्छाओं के दास बनकर गलत आचरण के साथ नरक के भागी बनते हैं।

इस जीवन एवं मरने का बाद की सत्यता को जानने के लिए पवित्र कुरआन का अध्ययन करें। अपनी भाषा में मुफ्त प्राप्त करने हेतु हमसे संपर्क करें:

९९२०९५५५९७ / ९९२०३७०६५९

albirr.foundation@gmail.com | www.albirr.in

मौत करीब है

> "तुम जहाँ कहीं भी होगे मौत तुम्हें आ पकड़ेगी चाहे तुम मज़बूत किलों में हो।" (कुरआन ४:७८)

मौत एक ऐसी सच्चाई है जिससे कोई भाग नहीं सकता। यह हर, दिन, हर घंटा, हर लम्हा हमारे करीब होती जा रही है। सी.आई.ए. की वर्ल्ड फैक्ट बुक २००७ के अनुसार हर सेकंड में २ व्यक्तियों की मौत होती है, इसका मतलब है हर साल तकरीबन ५७ लाख ९० हज़ार लोग! हर किसी को भाग्य के इस अनचाही अनचाहे फैसले को मानना ही पड़ता है फिर चाहे वह किसी भी उम्र, जाती या कितने ही ऊंचे सामाजिक एवं धार्मिक रुतबे वाला व्यक्ती हो।

बड़े-बड़े राजा महाराजा, करोड़पती, ताकतवर कहाँ गए? वो जो अपनी खुबसूरती पर नाज़ करते थे, जो लोगों में बड़े मशहूर थे, जिन्हें लोग बहुत समझदार कहते थे वे सब कहाँ हैं?

मौत की सत्यता

मौत कोई आफत नहीं बल्कि इस दुनिया से दूसरी दुनिया में जाने का एक माध्यम है। मौत हमें यह दिलाती है कि हम इस बात पर विचार करें कि हमारे जीवन का उद्देश्य क्या है तथा मरने के बाद हमारे साथ क्या होगा।

पवित्र कुरआन में अल्लाह कहता है कि उसने हमें इस लिए पैदा किया कि हम सिर्फ उसी की इबादत करें, तथा यह जीवन एक परिक्षा कि कौन इसके उद्देश्य को पूरा करता है।

"मैंने जिन्नात और इंसानों को सिर्फ इसीलिए पैदा किया कि वे केवल मेरी इबादत करें।" (कुरआन-५१:५६)

अल्लाह ने हमें इस बात से भी अवगत करा दिया कि जीवन तथा मृत्यू का उद्देश्य क्या है:

"जिसने ज़िन्दगी और मौत को इसलिए पैदा किया कि तुम्हारा इम्तिहान ले कि तुम में से अच्छे कर्म कौन करता है।" (कुरआन-६७:२)

मौत की तैयारी का यह अर्थ नहीं कि कोई पहले से ही अपनी अर्थी का सामन इकट्ठा करले बल्कि इसका अर्थ यह है कि हम इस जीवन के उद्देश्य को जानें कि - सिर्फ अल्लाह की इबादत की जाए, उसके आदेशानुसार जीवन व्यतीत किया जाए तथा अच्छे कर्म किए जाएँ। इस्लाम में इबादत का अर्थ सिर्फ पूजा-पाठ नहीं बल्कि हर वह कर्म जो अल्लाह के लिए और उसके आदेशानुसार किया जाए, एक इबादत है जिसका इंसान को फल मिलेगा।

मृत्यू के क्षण

> "हर इंसान देख-भाल ले कि कल के लिए उस ने कर्मो का क्या (भणडार) भेजा है।" (कुरआन ४:७८)

हर रोज़ हम मौत की कितनी ही मिसालों को देखते हैं। हमने लोगों को बड़ी आसानी से बिना किसी दर्द या कष्ट के मरते देखा है, लेकिन यह हकीकत नहीं है, जब एक इंसान मरता है और आत्मा शरीर से निकलती है तब हो सकता है कि ऊपर से शरीर की स्थिती से आत्मा की दशा का अंदाज़ा न लग सके। आत्मा की शांती या तकलीफ इस बात पर निर्भर करती है कि जीवन में उसके कर्म कैसे थे, फिर चाहे मरने वाला किसी भी कारण से मरा हो।

उदाहरण के तौर पर दो व्यक्ति किसी ऐसे स्थान की तरफ जाने की टिकिट निकालते हैं जहाँ वे पहले कभी न गए हों और जहाँ से उनको वापस आना भी न हो। अब उनमें से पहले व्यक्ति ने उस स्थान के बारे में वहाँ के रहन-सहन, कायदे-कानून एवं भाषा की सारी जानकारी प्राप्त कर रखी है तथा वहाँ की मुद्रा एवं ज़रूरत के सामान रख लिए हों और जब उसके जाने का समय आ जाता है तो बिना किसी दुविधा के वह सफर के लिए तैयार हो जाता है। वह बिल्कुल सुरिक्षत एवं सहज महसूस करता है क्योंकि उसने सारी तैयारियाँ की होती है।

इसके उलट, दूसरा व्यक्ति लापरवाही से जीवन गुज़ारता रहता है कोई तैयारी नहीं यहाँ तक कि जाने का समय आ जाता है। वह उस अनजाने गंतव्य पर भ्रमित एवं डर की अवस्था में पहुँचता है। उसकी लापरवाही उसे एक भयानक हालात से दो-चार करवाती है और उसे समझ में आता है कि वह सारी चीज़ें जो वह यहाँ लेकर आया है किसी काम की नहीं हैं।

"यहाँ तक कि जब उनमें से किसी की मौत आने लगती है तो कहता है कि हे मेरे रब! मुझे वापस लौटा दे। कि अपनी छोड़ी हुई दुनिया में जाकर नेकी के काम करूँ, "

(कुरआन २३:९९-१००)

और ज़रा सोचें उन लोगों के बारे में कि जो नरक का ईंधन बन गये और जब उनसे पूछा जाएगा कि किस चिज़ ने तुम्हें यहाँ तक पहुँचाया तो वे कहेंगे:

"वे जवाब देंगे कि हम नमाज़ी न थे। न भूखों को खाना खिलाते थे, और हम बेकार बात करने वालों के साथ बेकार बात में व्यस्त रहा करते थे। और हम बदले के दिन को झुठलाते थे। यहाँ तक कि हमारी मौत आ गयी।"

(पवित्र कुरआन ७४:४३-४७)

हम सभी का मौत से मुलाकात का समय तय है, और हम सभी को एक अंजान गंतव्य तक सफर करना है। ज़रा खुद से पूछें- क्या आपने उस सफर की तैयारी कर ली?

जीवन का उद्देश्य

> "क्या तुम यह समझ बैठे हो कि हम ने तुम्हें बेकार ही पैदा किया है, और यह कि तुम हमारी ओर लौटाये ही नही जाओगे?" (कुरआन २१:११५)

जीवन एक इम्तिहान है जिसका अंत मौत के रूप में होता है, परंतु इससे किसी के अस्तित्व का अंत नहीं होता। मौत के आते ही अच्छे कर्म करने के सारे दरवाज़े बंद हो जाते हैं। तब पछताने का मौका भी नहीं मिलेगा, और हमारे सारा हिसाब-किताब हमारी आस्था एवं कर्मों के अनुसार होगा। इंसान की ज़िंदगी दो हिस्सों में बॅटी हुई है, एक इस दुनिया की संक्षिप्त सी ज़िंदगी और दूसरे बाद का अनन्त जीवन। किसी कम बुद्धी का इंसान भी इस बात को स्वीकार करेगा कि मृत्यू के पश्चात के अनन्त जीवन का आनन्द इस दुनिया की छोटी सी ज़िन्दगी के सीमित सुख से कहीं बेहतर है।

अल्लाह ने इंसानो को पैदा किया और उसे उसके कर्मो का ज़िम्मेदार बनाया क्योंकि उसे सही और गलत में फर्क करने की समझ और चुनाव की स्वतंत्रता दी। अगर मृत्यू के पश्चात किसी जीवन का अस्तित्व न हो तो अच्छे-बुरे कर्मो एवं उसके अनुसार इंसाफ प्राप्त होने का कोई औचित्य नहीं रह जाता।

अत: इंसाफ का यह तकाज़ा है कि निर्णय का एक दिन तय हो जहाँ हर जीव को अपने कर्मों के अनुसार हिसाब देना होगा।

"क्या हम मुसलमानों को मुजरिमों के बराबर कर देंगे तुम्हें क्या हो गया, कैसे फैसले कर रहे हो?"

(कुरआन ६८:३५-३६)

निर्णय का दिन

इस दुनिया में किये जाने वाले हर कर्म का पूरा-पूरा ब्योरा रखा जा रहा है, जैसा कि अल्लाह ने कहा है:

"और आमालनामा (कर्म-पत्र) आगे में रख दिये जाएंगे, फिर तू देखेगा कि गुनहगार उसके लेख से डर रहे होंगे कि हाय हमारा नाश! यह कैसा लेख है जिसने कोई छोटा-बड़ा बिना घेरे नहीं छोड़ा, और जो कुछ उन्होंने किया था सबकुछ मौजूद पाएंगे और तेरा रब किसी पर ज़ुल्म और नाइंसाफी न करेगा।" (कुरआन १८:४९)